Original Article
ISSN (Online): 2582-7472

ShodhKosh: Journal of Visual and Performing Arts
July-December 2023 4(2), 5808–5813

UNIVERSALITY OF EDUCATION AND CULTURE AND EDUCATIONAL ACCESS: IN THE CONTEXT OF NATIONAL CURRICULUM FRAMEWORK 2022

शिक्षा संस्कार की सार्वभौमिकता एवं शैक्षिक पहुंच: राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2022 के संदर्भ में

Anil Kumar [1], Dr. Gopal Singh [2]

[1] Research Student, Chhatrapati Shahu Ji Maharaj University Kanpur, India
[2] Assistant Professor, Chhatrapati Shahu Ji Maharaj University Kanpur, India

ABSTRACT

English: Along with the emergence, development and progress of human life, there has been a change in the nature of education, culture, thoughts, behavior and activities. The culture of education has developed from ancient times to the present technological era. In ancient times, the primary education of the Gurukul system has now settled in the primary education school along with nursery, LKG, UKG. The place of family education has become very secondary. Every person has become completely dependent on school and college. While the minimum age for admission in Gurukul was eight years, now there is a well-planned scheme to get admission in Bal Vatika in two to two and a half years. The inclusion of psychology in education has been revolutionary for the modern education system. Psychologists have said that the first five years are important for the child. Technology and modern stimulating resources have proved to be very effective for him. Indian lifestyle is diverse as compared to other countries. Keeping in mind these diversities and needs of country, time and circumstances, Indian National Education Policy 2020 was introduced in the 21st century after several decades. By making structural changes in this policy, better management of primary education and pre-primary education has been done. To achieve the criteria set in the National Education Policy 2020, it has been kept in mind in the National Curriculum Framework 2022 that universal and educational access to education culture should be accessible to every boy and girl.

Hindi: मानव जीवन के उद्भव विकास एवं उन्नति के साथ-साथ शिक्षा, संस्कार, विचार, व्यवहार तथा क्रियाकलापों में स्वभाव परिवर्तन हुआ है। प्राचीन काल से लेकर वर्तमान तकनीकी युग तक शिक्षा की संस्कृति का विकास हुआ है प्राचीन काल में गुरुकुल प्रणाली की प्रारंभिक शिक्षा वर्तमान समय में नर्सरी, एल.केजी, यू.केजी के साथ प्राथमिक शिक्षा शिक्षालय में रच - बस गई है। पारिवारिक शिक्षा का स्थान अत्यंत गौण हो गया है। प्रत्येक व्यक्ति पूर्णतः स्कूल व विद्यालय पर निर्भर हो गया है। जहां गुरुकुल में प्रवेश के लिए न्यूनतम आठ वर्ष की आयु निर्धारित थी, वहीं अब दो - ढाई साल में ही बाल वाटिका में प्रवेश कराने की सुनियोजित योजना है। शिक्षा में मनोविज्ञान का समावेश होना आधुनिक शिक्षा व्यवस्था के लिए क्रांतिकारी रहा है। मनोवैज्ञानिकों ने प्रथम पाँच वर्ष बालक के लिए महत्वपूर्ण कहा है। तकनीकी एवं आधुनिक उत्तेजक संसाधन उसके लिए अत्यंत प्रभावकारी सिद्ध हुआ है। भारतीय जीवन - शैली अन्य देशों की तुलना में विविधता पूर्ण है। देश - काल एवं परिस्थितियों की इन्हीं विविधताओं-विभिन्नताओं और आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए कई दशकों बाद 21वीं सदी में भारतीय राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 लाई गई। इस नीति में ढांचागत परिवर्तन करते हुए प्राथमिक शिक्षा एवं पूर्व प्राथमिक शिक्षा का बेहतर प्रबंध किया गया है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में निर्धारित मानदंडों को प्राप्त करने के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2022 में यह ध्यान रखा गया है कि शिक्षा संस्कार की सार्वभौमिक एवं शैक्षिक पहुंच प्रत्येक बालक- बालिका तक सुलभ होनी चाहिए।

Keywords: Educational Access, Curriculum, Bal Vatika, Stimulating Resources, ECCE Etc, शैक्षिक पहुँच, पाठ्यक्रम, बाल वाटिका, प्रेरक संसाधन, ईसीसीई आदि

Corresponding Author
Anil Kumar,
anilkumar351990@gmail.com

DOI
10.29121/shodhkosh.v4.i2.2023.6052

Funding: This research received no specific grant from any funding agency in the public, commercial, or not-for-profit sectors.

Copyright: © 2023 The Author(s). This work is licensed under a Creative Commons Attribution 4.0 International License.

With the license CC-BY, authors retain the copyright, allowing anyone to download, reuse, re-print, modify, distribute, and/or copy their contribution. The work must be properly attributed to its author.

OPEN ACCESS

1. प्रस्तावना

शिक्षा एक ऐसी प्रक्रिया है, जो मानव जीवन के विकास के साथ प्रारंभ हुई है और जब तक जीवन रहेगा तब तक शिक्षा अनवरत चलती रहेगी। शिक्षा को जीवनपर्यंत चलने वाली प्रक्रिया कहा गया है किंतु शिक्षा को जन्मजन्मांतर चलने की प्रक्रिया कह दिया जाए तो कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी यूं तो शिक्षा का प्रारंभ मां के गर्भ से ही हो जाता है कि शिशु के जन्म के उपरांत सर्वप्रथम शिक्षिका माता होती है। इसके साथ-साथ पिता, परिवार के सदस्य, पड़ोस में रहने वाले लोग तथा मित्र मंडली भी सीखाने में अहम भूमिका निभाते हैं। शिक्षा और संस्कार की जो नींव यहां पर पड़ जाती है, वह शिशु में जीवन पर्यंत देखी जा सकती है। शिक्षा का एक प्रमुख स्वरूप औपचारिक शिक्षा है जिसमें विद्यालय, पुस्तकालय, वाचनालय, संग्रहालय आदि हैं किंतु इन सभी में विद्यालय सर्व प्रमुख है। विद्यालय ही वह पुण्य स्थल है जहां माता-पिता एवं परिवार से प्राप्त शिक्षा एवं संस्कार की नीव पर एक-एक ईंट रखी जाती है। प्राचीन काल से शिक्षा का प्रबंध तो किया गया किंतु व्यवस्थित प्रारंभिक शिक्षा का स्वरूप 19वीं सदी के मध्य में विकसित हुआ। भारत में अंग्रेजों के शासनकाल में प्राथमिक शिक्षा को निःशुल्क एवं अनिवार्य करने की मांग की गई थी। आजादी के उपरांत संविधान के अनुच्छेद 45 में इसका प्रावधान किया गया। नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986 तथा 21वीं सदी की प्रथम राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में प्राथमिक शिक्षा के साथ-साथ पूर्व प्राथमिक शिक्षा पर गहन विचार विमर्श करके वह स्थान दिया गया जिसके लिए पूरी दुनिया में फ्रोबेल, मांटेसरी, डाल्टन, गांधीजी, गिज्जुभाई आदि ने समय-समय पर कार्य किया। वर्तमान समय में पूर्व प्राथमिक शिक्षा एवं प्राथमिक शिक्षा शैक्षिक प्रबंध का एक प्रमुख हिस्सा है।

2. शिक्षा एवं संस्कार की नींव प्रारंभिक शिक्षा

शिशु जन्म के समय एक जैविकीय प्राणी मात्र होता है। सामाजिक प्राणी बनाने में शिक्षा एवं संस्कार का महत्वपूर्ण हाथ होता है। शिक्षा मात्र शब्दों, अंकों, रेखाओं, चित्रों, इकाइयों के ज्ञान तक सीमित नहीं होती है, वरन इस माध्यम से शारीरिक गतिकी का विकास, चरित्र - निर्माण तथा सामाजिक, संवेगात्मक गुणों का उन्नयन किया जाता है। दुनिया के सभी देश अपने देश-काल तथा परिस्थिति के अनुसार बदलते स्वरूप के आधार पर शिक्षा व्यवस्था में बदलाव करते हैं। भारत ने भी इसी क्रम में समय-समय पर शिक्षा को तंत्र, मंत्र तथा यंत्र से ओतप्रोत करने का कार्य किया है। 21वीं सदी के प्रथम दशक में वर्ष 2005 को 'राष्ट्रीय पाठ्यचर्या वर्ष' घोषित किया गया तथा प्रत्येक स्तर की शिक्षा के अनुरूप पाठ्यचर्या निर्धारित करने का कार्य किया जो आने वाले भारत के भविष्य को अच्छी शिक्षा, संस्कार, सदव्यवहार से आच्छादित करें। वर्ष 2020 में घोषित राष्ट्रीय शिक्षा नीति के व्यावहारिक प्रस्तुतीकरण के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2022 में स्मृति स्तर के शिक्षण से लेकर चिंतन स्तर तक के शिक्षण को नया कलेवर दिया गया है। पूर्व प्राथमिक शिक्षा एवं प्राथमिक शिक्षा के अंतर्गत शिक्षा गणितीय ज्ञान, सांकेतिक पहचान के साथ भारतीय सभ्यता एवं संस्कृति के संस्कारों से जोड़ने को महत्वपूर्ण स्थान दिया गया है।

3. फाऊंडेशनल स्टेज पर शिक्षा की रूपरेखा

बच्चों की शिक्षा के लिए नींव की ईंट के समान पूर्व प्राथमिक एवं प्राथमिक शिक्षा होती है। राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा-फाऊंडेशनल स्टेज 2022 को 20 अक्टूबर 2022 में प्रस्तुत किया गया। इसका एक प्रमुख लक्ष्य भारत स्वयं को किस प्रकार तैयार करे कि 21वीं सदी के समाज, तकनीकी एवं ज्ञान के चुनौतीपूर्ण पहलुओं का सामना कर सके। इस रूपरेखा में 3 वर्ष से 8 वर्ष आयु वर्ग के बच्चों को विशेष ध्यान में रखा गया है। यह अब तक के भारतीय शिक्षा के इतिहास में प्रथम एकीकृत पाठ्यचर्या की रूपरेखा है जो एनईपी 2020 के स्कूली शिक्षा के ढांचे 5 + 3 + 3 + 4 का परिणाम है। पूर्व प्राथमिक एवं प्राथमिक शिक्षा के संबंध में प्रमुख तथ्य निम्नलिखित हैं।

1) प्राथमिक बाल्यावस्था में देखभाल एवं शिक्षा का संबंध बच्चों के प्रथम आठ वर्ष की आयु से संबंधित है। इन वर्षों में उसके शारीरिक, संज्ञानात्मक, सामाजिक, भावात्मक एवं नैतिक विकास की शिक्षा पर ध्यान दिया गया है। जिसमें बच्चा जन्म से 0-3वर्ष तक घर पर परिवार के सदस्यों के साथ अनौपचारिक ढंग से सीखता है। संस्थागत वातावरण प्रदान करके 03वर्ष- 08वर्ष तक की आयु में समुचित शिक्षा का व्यवस्थित प्रबंध किया गया है।
2) बच्चों की आयु 03 वर्ष- 08 वर्ष को दो भागों में विभक्त किया गया है प्रथम 03 वर्ष से 06 वर्ष तक आंगनबाड़ियों, बालवाटिका तथा प्री.स्कूल में शिक्षा, दीक्षा-संस्कार प्रदान किया जाएगा तथा द्वितीय 06 वर्ष से 08 वर्ष तक स्कूल में प्रारंभिक बाल्यावस्था की शिक्षा का समुचित प्रबंध किया गया है। जिसमें बच्चों को कक्षा एक और दो में सिखाया पढ़ाया जाएगा। यहां पर स्वास्थ्य, सुरक्षा, सतर्कता, गत्यात्मक कार्य, व्यायाम कसरत, बातचीत करना, साथियों के बीच संबंध, आदत निर्माण, समय पर काम करना आदि पर ध्यान देना मुख्य है।
3) प्रारंभिक बाल्यावस्था शिक्षा कार्यक्रम के अंतर्गत अक्षर ज्ञान, भाषा ज्ञान, संख्याएं, गणना करना, रंग पहचान, ड्राइंग, आंतरिक-बाह्य खेलकूद, घूमना-फिरना, कलात्मक क्रियाएं, चिंतन, मनन आदि को सिखाने में अभिन्न अंग के रूप में स्थान दिया गया है। इसलिए 06 वर्ष- 08 वर्ष आयु वर्ग में बुनियादी साक्षरता तथा संख्या ज्ञान (एफ.एल.एन.) को आधार बनाया गया है।

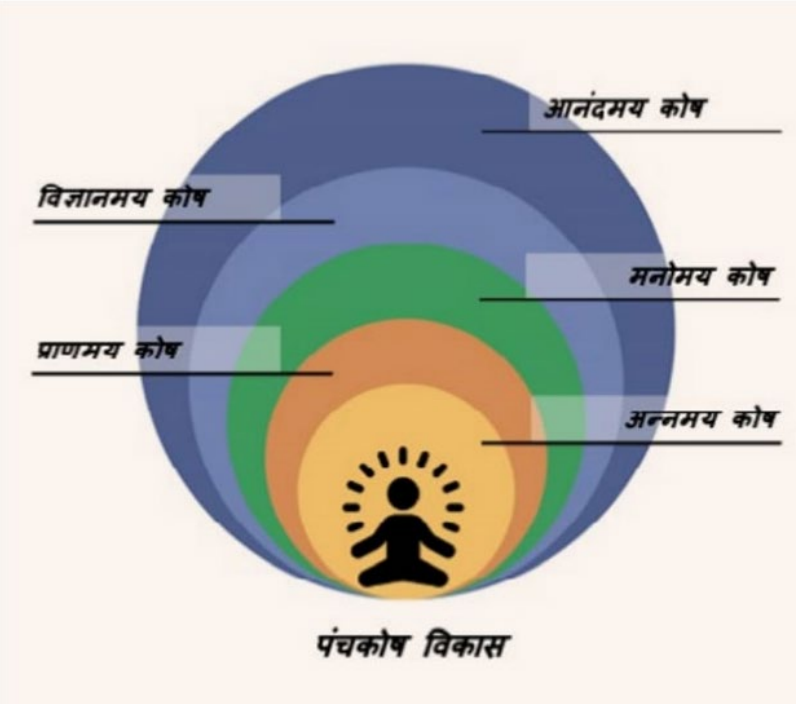

चित्र सं.: 1

4) राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 की अद्यतन शैक्षिक ढांचे के तहत 5 + 3 + 3 + 4 में प्रथम 05 वर्ष का संबंध आयु वर्ग 03वर्ष- 08वर्ष से है, जिसे ही फाऊंडेशनल स्टेज कहा गया है। इस आयु में तीव्र शारीरिक, मानसिक, भावात्मक विकास होता है। इसलिए इसमें माता-पिता, परिवार, पड़ोस, सगे-संबंधी, नाते-रिश्तेदार तथा आसपास के समुदाय को भी शामिल किया गया है। इन सभी का बच्चों के सार्वभौमिक विकास में प्रत्यक्ष एवं परोक्ष रूप से बहुत प्रभाव पड़ता है।

5) राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 एक प्रमुख लक्ष्य है कि निःशुल्क उत्तम गुणवत्तापूर्ण, सुरक्षित दृष्टि केंद्रों के साथ विकासात्मक पहलुओं पर ध्यान रखकर प्रत्येक बच्चों को प्रारंभिक बाल्यावस्था में देखभाल एवं शिक्षा सुलभ हो चाहे उसका जन्म, पृष्ठभूमि, क्षेत्र, निवास, खान-पान, रहन-सहन, माता-पिता, परिवार-पड़ोस, आदि कैसा भी हो। बच्चों को सृजनशील, उत्पादक, विचारवान, तर्कशील, नैतिकता से ओतप्रोत, सहानुभूति, परमानुभूति, चिंतनशील आदि के लिए तैयार किया जाए।

6) भारतीय ज्ञान परंपरा कल्याण तथा विश्व बंधुत्व की रही है। प्रारंभिक स्तर से ही बच्चों में शिक्षा के भारतीय ज्ञान परंपरा कल्याण तथा विश्व बंधुत्व की रही है। प्रारम्भिक स्तर से ही बच्चों में शिक्षा के साथ-साथ भारतीय साहित्य, संस्कृति, सभ्यता, पहचान से परिचित कराना आवश्यक है। यही वह आयु है जिसमें बच्चों के शरीर, मन और आत्मा में देश के कल्याण एवं उसकी पहचान की भावना भरी जा सकती है। इसलिए यह अतिआवश्यक है कि बच्चों को समय के साथ-साथ शिक्षा और संस्कार दिया जाए।

7) भारतीय ज्ञान परंपरा का आधार स्तंभ पंचकोष सिद्धांत है बच्चों में क्रमशः अन्नमय कोष शारीरिक विकास के लिए, प्राणमय कोष जीवन शक्ति एवं ऊर्जा के लिए, मनोमय कोष मनःशांति, स्थिरता एवं चिंतन के लिए, विज्ञानमय कोष बौद्धिक एवं तार्किक विश्लेषण के लिए तथा आनंदमय कोष आंतरिक, आत्मिक शांति तथा स्व के लिए कराया जाय जिससे बच्चा संपूर्ण मनुष्य बनने की ओर बढ़ सके।

चित्र सं.: 2

8) बच्चों में शैक्षिक चिंतन विकसित करने के लिए देश के महान शिक्षाविदों महात्मा गांधी, रवींद्रनाथ टैगोर, स्वामी विवेकानंद, सावित्रीबाई फुले, ज्योतिबा फुले, महर्षि अरविंदो, जे. कृष्णमूर्ति आदि के शैक्षिक विचारों, संदेशों, सिद्धांतों से अवगत कराया जाए। इन सभी के विचारों से बच्चों को प्रत्यक्ष एवं परोक्ष चिंतन, मनन एवं अनुशीलन को विकसित करने में सहायता मिलेगी।

9) फाऊंडेशनल स्टेज के लिए भौतिक एवं मानवीय संसाधनों का प्रबंध किया जाए। वर्ष 2022 के एक आंकडें के अनुसार 13 लाख 99 हजार 6 सौ 31 स्वीकृत आंगनवाड़ी हैं। वर्ष 2020-21 में 92.7% नामांकन प्राथमिक में हुआ। 6 वर्ष से 10 वर्ष आयु वर्ग के 95% बच्चे किसी न किसी स्कूल में शिक्षा प्राप्त करने जाते हैं। स्वीकृत आंगनवाड़ी में मात्र 0.5% सहायिका के पद रिक्त हैं।

10) राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा- फाऊंडेशनल स्टेज 2022 में बच्चों को अच्छा पोषण एक अभिन्न अंग माना गया है। जिसके लिए दिनभर पोषक खाद्य पदार्थ दिए जाते हैं। सीखने के प्रतिफल में शिक्षक, सहायिका का मुख्य स्थान है किंतु पोषण पर भी ध्यान रखना है क्योंकि स्वस्थ शरीर ही स्वस्थ मानसिक विकास का आधार होता है।

तालिका सं.: 1

मिड-डे-मील योजना साप्ताहिक आहार तालिका (मेन्यू)				
दिन	नवीन मेन्यू	व्यंजन का प्रकार	100 बच्चों हेतु वांछित सामग्री (प्राथमिक स्तर हेतु)	100 बच्चों हेतु वांछित सामग्री (उच्च प्राथमिक स्तर हेतु)
सोमवार	रोटी-सब्जी जिसमें सोयाबीन अथवा दाल की बड़ी का प्रयोग एवं ताजा मौसमी फल	गेहूं की रोटी एवं दाल या सोयाबीन की बड़ी युक्त सब्जी (मौसमी सब्जी का प्रयोग) एवं ताजा मौसमी फल	आटा 10 कि.ग्रा., सोयाबीन अथवा दाल की बड़ी 1 कि.ग्रा. तथा सब्जी 5 कि.ग्रा., तेल या घी 500 ग्रा.	आटा 15 कि.ग्रा., सोयाबीन अथवा दाल की बड़ी 1.5 कि.ग्रा. तथा सब्जी 7.5 कि.ग्रा., तेल या घी 750 ग्रा.
मंगलवार	चावल-दाल	चावल एवं दाल यथा- चना या अरहर या अन्य दाल	दाल 02 कि.ग्रा., चावल 10 कि.ग्रा., तेल या घी 500 ग्रा.	दाल 03 कि.ग्रा., चावल 15 कि.ग्रा., तेल या घी 750 ग्रा.
बुधवार	तहरी एवं दूध (उबला हुआ गरम दूध)	चावल एवं मौसमी सब्जी मिश्रित तहरी एवं प्रा.वि. या उ.प्रा.वि. हेतु क्रमशः 150ध्200 मि.ली. उबाल कर गरम किया गया दूध	चावल 10 कि.ग्रा., मौसमी सब्जी 5 कि.ग्रा., तेल या घी 500 ग्रा. एवं 15 ली. दूध	चावल 15 कि.ग्रा., मौसमी सब्जी 7.5 कि.ग्रा., तेल या घी 750 ग्रा. एवं 20 ली. दूध
गुरूवार	रोटी-दाल	गेहूं की रोटी एवं दाल, (यथा- चना या अरहर या अन्य दाल)	आटा 10 कि.ग्रा., दाल 2 कि.ग्रा., तेल या घी 500 ग्रा.	आटा 15 कि.ग्रा., दाल 3 कि.ग्रा., तेल या घी 750 ग्रा.
शुक्रवार	तहरी जिसमें सोयाबीन की बड़ी का प्रयोग	चावल एवं सब्जी (आलू, सोयाबीन एवं समय पर उपलब्ध मौसमी सब्जियां)	चावल 10 कि.ग्रा., मौसमी सब्जी 5 कि.ग्रा., सोयाबीन की बड़ी 1 कि.ग्रा., तेल या घी 500 ग्रा.	चावल 15 कि.ग्रा., मौसमी सब्जी 7.5 कि.ग्रा., सोयाबीन की बड़ी 1.5 कि.ग्रा., तेल या घी 750 ग्रा.
शनिवार	चावल-सोयाबीन युक्त सब्जी	चावल एवं सोयाबीन तथा मसाले एवं ताजी सब्जियां	चावल 10 कि.ग्रा., मौसमी सब्जी 5 कि.ग्रा., सोयाबीन की बड़ी 1 कि.ग्रा., तेल या घी 500 ग्रा.	चावल 15 कि.ग्रा., मौसमी सब्जी 7.5 कि.ग्रा., सोयाबीन की बड़ी 1.5 कि.ग्रा., तेल या घी 750 ग्रा.

स्रोत: https://www.upmdm.org/

11) राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के अनुसार बच्चों के सर्वांगीण विकास में आगे की राह पर ध्यान देना अति आवश्यक है। कुल का लगभग 5% से 7% बच्चे जो किन्हीं कारणों से प्री स्कूल, आंगनबाड़ी तथा अन्य केंद्र तक नहीं पहुंच पा रहे हैं यह करोड़ों बच्चे चुनौतीपूर्ण हैं कि उन्हें कैसे मुख्यधारा में लाया जाएगा। ऐसे बच्चों की सामाजिक, सांस्कृतिक पृष्ठभूमि का असर कैसे कम किया जाए।

12) राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के संयोजित व्यवस्थापन के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा- फाउंडेशनल स्टेज 2022 का सैद्धांतिक स्वरूप स्पष्ट है किंतु व्यावहारिक रूप में मूर्त स्वरूप प्रदान करना जरूरी है इसके लिए समाज, राज्य एवं व्यक्ति को आगे आकर जन-मानस में भाव भरने की आवश्यकता है। एक- दूसरे से भेदभाव मुक्त, परस्पर समन्वय, सहकारिता के साथ हाथ से हाथ मिलाकर चलना होगा।

13) भारत सरकार के शिक्षा मंत्रालय ने राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा- फाउंडेशनल स्टेज 2022 में बच्चों के सीखने, चिंतन करने, भावना भरने, शरीर विकसित करने आदि का ध्यान रखा है। इसलिए इस स्टेज में अत्यधिक लचीलेपन, बहुस्तरीय शिक्षण-अधिगम तथा खेल-खिलौना आधारित गतिविधियों से सीखने पर विशेष बल दिया है।

वर्तमान प्रारंभिक शिक्षा की समालोचना: शिक्षा का प्रबंधन सरकार, समाज और परिवार मिलकर देश काल एवं परिस्थितियों के अनुसार करने का प्रयत्न करते हैं। आरंभ में प्रारंभिक शिक्षा का व्यवस्थित स्वरूप नहीं था किंतु मध्यकालीन शिक्षा व्यवस्था में प्रारंभिक शिक्षा के लिए मकतब का उल्लेख किया गया है। विश्व में सर्वप्रथम यूरोप में प्रारंभिक शिक्षा का व्यवस्थित स्वरूप दिखाई दिया जहां फ्रोबेल, मांटेसरी, मैकमिलन बहनों के प्रयास से धीरे-धीरे दुनिया के दूसरे स्थान पर प्रारंभिक शिक्षा का स्वरूप विकसित हुआ। भारत में अंग्रेजों के शासनकाल में प्रारंभिक शिक्षा की नींव पड़ी थी किंतु महात्मा गांधी की बेसिक शिक्षा योजना तथा भगवान गिरजा शंकर बधेका के पूर्व प्राथमिक शिक्षा की योजना ने नया कलेवर भारतीय परिस्थिति के अनुसार दिया। स्वतंत्रता के उपरांत भारत के संविधान में अनुच्छेद 45 के अंतर्गत प्रारंभिक शिक्षा को निःशुल्क एवं अनिवार्य किया गया समयानुसार देश के लिए राजीव गांधी सरकार ने नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986 की घोषणा की जिसमें सर्वप्रथम प्रारंभिक बाल्यावस्था में देखभाल एवं शिक्षा की बात की गई। इस नीति में शैक्षिक ढांचा 10 + 2 + 3 को राष्ट्रीय स्वरूप प्रदान करने का कार्य किया गया। परिवर्तनशील समय एवं तकनीकी से प्रभावित 21वीं सदी में नई शिक्षा नीति की घोषणा नरेंद्र मोदी सरकार ने किया। शैक्षिक ढांचा 10 + 3 + 3 + 4 की व्यवस्थापना करने की बात की है। भिन्न-भिन्न आयु वर्ग के बच्चों की शिक्षा पोषण विकास के साथ-साथ भारतीय सभ्यता एवं संस्कृति से ओतप्रोत करने का लक्ष्य है किंतु यक्ष प्रश्न यह है कि भारत देश की पहचान विविधता में एकता है जहां अनेक धर्म, जाति, संप्रदाय को मानने वाले लोग रहते हैं। यहां संपत्ति, श्रम और विश्वास के आधार पर तरह-तरह की सामाजिक, सांस्कृतिक, वैचारिक भिन्नताएं हैं? इन सबके लिए एक समान अवसर की शिक्षा भेदभाव मुक्त व्यवहार, परस्पर मेल मिलाप की भावना, सहयोग, समर्पण का भाव, ऊंच - नीच, गरीब - अमीर, कुल-खानदान, देहाती - शहरी, आदि के बीच समुचित तालमेल करना कितना संभव है, कैसे होगा, क्या करना होगा यही चिंतनीय पहलू है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में इन सभी तथ्यों पर गहनतापूर्वक विचार करके समुचित स्थान दिया गया है। राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा- फाउंडेशनल स्टेज 2022 के संदर्भ में व्यापक नियोजन किया गया है किंतु आगामी पाँच, सात, दस वर्षों में इसके परिणाम का अवलोकन किया जा सकेगा। कोई भी नीति, नियम, सिद्धांत गलत नहीं होते हैं उसको बनाने वालों की मंशा कभी गलत नहीं होती है किंतु वास्तविकता यह है कि गलतियां उसके व्यावहारिक प्रकटीकरण में होती हैं। अब देखना होगा कि शिक्षा समवर्ती सूची का विषय है। अलग-अलग राज्यों में भिन्न-भिन्न विचारधारा की सरकारें हैं। किस तरह तथा किस भावना से जुड़कर राष्ट्रीय शिक्षा नीति एवं उसकी पाठ्यचर्या की रूपरेखा को राष्ट्रीय स्वरूप प्रदान किया जाएगा। शैक्षिक दृष्टिकोण से आम जनमानस के साथ - साथ जनप्रतिनिधियों, पूंजीपतियों, समाजसेवियों, शिक्षाविदों, शिक्षकों एवं अभिभावकों का एकमत होना ही बच्चों के सकारात्मक भविष्य को प्रतिबिंब करेगा।

4. निष्कर्ष

शिक्षा की प्रक्रिया अत्यंत व्यापक होती है। जन्म से मृत्यु तक व्यक्ति कुछ ना कुछ सीखता रहता है। सीखने की प्रक्रिया में पढ़ना-लिखना सीखने से पहले सुनना, बोलना, समझना - बूझना होता है। स्वस्थ आहार - विचार - व्यवहार की नींव परिवार में पड़ जाती है। प्रारंभिक शिक्षा के केंद्र उसे मजबूत करने तथा विकसित करने का कार्य करते हैं। बच्चों को नियमित, संयमित, व्यवस्थित, सक्रिय बनाने में प्री.स्कूल, स्कूल, कॉलेज, विश्वविद्यालयों का योगदान है। इस संदर्भ में राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में प्रत्येक स्तर की शिक्षा के लिए बच्चों को तैयार करने, जागरूक करने तथा व्यक्तित्व का उन्नयन करने में मददगार होगी। शिक्षा की सीमा एक, दो, चार, छह वर्ष तक में बंधी नहीं है। यह एक संस्कार है, जो स्वभाव होता है पीढ़ी दर पीढ़ी स्थानांतरित होता रहता है। यह आशा और विश्वास है कि राष्ट्रीय शिक्षा नीति एवं उसके पाठ्यचर्या की रूपरेखा आने वाली पीढ़ी के लिए व्यक्तिगत, सामाजिक, तकनीकी, संज्ञानात्मक, भावनात्मक, बौद्धिक उन्नयन के लिए तैयार करेगी।

संदर्भ

पचैरी, गिरीश 2014. शिक्षा का अर्थ प्रकृति एवं सिद्धांत, आर लाल बुक डिपो, मेरठ (उ.प्र.).
राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा- फाउंडेशन स्टेज 2022ए हिंदी वर्जन, दिसंबर 2022 पीडीएफ शिक्षामंत्रालय, भारत सरकार

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020. हिंदी वर्जन, पीडीएफ शिक्षामंत्रालय, भारत सरकार.
सारस्वत, मालती 2010. शिक्षा मनोविज्ञान की रूपरेखा, आलोक प्रकाशन, लखनऊ (उ.प्र.)
श्रीवास्तव, डी. एन. 2008. बाल मनोविज्ञान, मोतीलाल बनारसी दास पब्लिकेशन, नई दिल्ली
सिंह, रामपाल 2007. शिक्षक तथा उदीयमान भारतीय समाज, विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा, (उ.प्र.).
यादव, अरविन्द कुमार 2023. बाल बिकास एवं शिक्षा विज्ञान, एडुनिक पब्लिकेशन, जौनपुर (उ.प्र.).